International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(1): 449-451

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(1): 449-451
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-11-2020
Accepted: 21-12-2020

Jyoti
Assistant Professor, Department of Sanskrit, Janki Devi Memorial College, University of Delhi, Delhi, India

Corresponding Author:
Jyoti
Assistant Professor, Department of Sanskrit, Janki Devi Memorial College, University of Delhi, Delhi, India

पाणिनि और वोपदेव की शैली का तुलनात्मक अध्ययन - (कृत्प्रत्ययों के संदर्भ में)

Jyoti

प्रस्तावना

भाषा मानवीय लोक व्यवहार का साधन है ! इस शब्दमयी भाषा का यथार्थ ग्रहण एवं साधु असाधुत्व का ज्ञान व्याकरण द्वारा किया जाता है भर्तृहरि द्वारा वाक्यपदीय में व्याकरण के महत्व का प्रतिपादन करते हुए कहा है -

तत्वावबोधः शब्दानां नास्ति व्याकरणादृते ! [1]

वि एवं आ पूर्वक कृ धातु में ल्युट् प्रत्यय के योग से निष्पन्न व्याकरण शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है -

व्याक्रियन्ते शब्दाः अनेन इति व्याकरणम् ! [2]

अर्थात् वह शास्त्र जिसमें प्रकृति -प्रत्यय द्वारा शब्दों का भेद स्पष्ट किया जाए!
संस्कृत भाषा की साधुता का मुख्य आधार पाणिनीय व्याकरण है ! तथापि पाणिनि परवर्ती काल में व्याकरण की सरलता और स्पष्टता तथा भाषा में आये नवीन प्रयोगों को व्याकरण में स्थान देने के लिए यद्यपि अष्टाध्यायी पर वार्तिक,भाष्य व वृत्तियाँ रची गई थी किन्तु फिर भी कुछ वैयाकरणों ने स्वतंत्र रूप से व्याकरण संप्रदायों की रचना की! व्याकरण के अनन्तर भी अनेक भाष्यकारों वार्तिककारों के द्वारा भी संस्कृत भाषा में पाए जाने वाले इतर शब्दों की साधुता सरलता और स्पष्टता को सिद्ध करने का पर्याप्त प्रयत्न किया गया है! परवर्ती सभी व्याकरणों का उपजीव्य पाणिनीय व्याकरण ही था अंतर केवल इतना था कि कुछ परवर्ती वैयाकरणों नें पाणिनीय प्रकरण शैली को अपनाया और कुछ वैयाकरणों नें शब्द सिद्धि को प्रमुखता देने के लिए व सरलता के लिए नामाख्यात विभाग रूप प्रक्रिया शैली को अपनाया ! धर्म विशेष की दृष्टि से भी संप्रदायों की रचना हुई लेकिन सभी का यह स्वतंत्र प्रयास श्लाघनीय रहा !
पाणिनीय उत्तरवर्ती व्याकरण परम्परा में आये वैयाकरणों में वोपदेव अपनी सरलता और स्पष्टता के लिए प्रसिद्ध हैं ! वोपदेवकृत मुग्धबोध व्याकरण अपने पूर्ववर्ती व्याकरण ग्रंथों की अपेक्षा अधिक संक्षिप्त एवं सरल व्याकरण ग्रन्थ है !

पाणिनि विरचित अष्टाध्यायी उत्सर्गापवादात्मक सूत्रों से युक्त प्रकरण शैली में लिखा गया ग्रन्थ है ! पाणिनि का समय पांचवी शताब्दी ईसा. पूर्व माना जाता है ! [3] वोपदेवकृत मुग्धबोध अतिसंक्षेपप्रिय एवं मुग्धबुध्दि जनों के लिए प्रक्रिया शैली में लिखा गया ग्रन्थ है ! वोपदेव से पूर्व ही पाणिनीय परम्परा में अष्टाध्यायी को आधार बनाकर रूपावतार, रूपमाला जैसे प्रक्रिया ग्रन्थ तथा स्वतंत्र सम्प्रदाय के रूप में कातंत्र, हेम-शब्दानुशासन, मलयगिरी-शब्दानुशासन, जैसे ग्रन्थ विद्यमान थे! लगभग तेहरवीं शताब्दी के उतरार्ध में होने वाले वोपदेव ने प्रक्रिया सिद्धि को महत्व देते हुए केवल ११८४ सूत्रों की सहायता से प्रक्रिया ग्रन्थ मुग्धबोध की रचना की! [4] यद्यपि वोपदेव ने प्रक्रिया ग्रंथो के अनुकरण पर अपने ग्रन्थ की रचना की तथापि मुग्धबोध के सूत्र क्रम में अन्य व्याकरण से भेद है! उनका प्रकरण क्रम का तंत्र से प्रभावित होते हुए भी मौलिक है - वर्णोपदेश, संज्ञा, संधि, स्याद्यंत (शब्दरूप), स्त्रीप्रत्यय, स (समास), त (तद्धित), त्याद्यंत (धातुरूप), तथा कृत प्रत्यय इनके ग्रन्थ का प्रकरण क्रम है ! पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में प्रकरण की योजना करते समय - प्रथम अध्याय में संज्ञा, द्वितीय में समास तथा कारक सम्बन्धी नियमों का, तृतीय में धातु विहित प्रत्ययों का, चतुर्थ में प्रातिप्रदिक प्रत्ययों का षष्ट और सप्तम में स्वर तथा शब्द रचना में वर्ण विकार का और अष्टम में वाक्य घटक पद का निरूपण किया है !

पाणिनीय अष्टाध्यायी वैदिक और लौकिक उभयविध भाषाओँ का ग्रन्थ है! पाणिनीय परवर्ती वैयाकरणों ने कम समय में अधिक तथा व्यावहारिक ज्ञान प्राप्ति ही व्याकरण का उद्देश्य मानते हुए तथा वैदिक भाषा की व्याकरणबद्धता में सर्वथा असमर्थता को जानकर व्याकरण का क्षेत्र लौकिक संस्कृत तक सीमित रखा ! इसी परम्परा में वोपदेव ने केवल लौकिक भाषा को अधिकृत कर व्याकरण ग्रन्थ की रचना की तथा केवल एक बार ही बहुलं ब्रह्मणि [5] सूत्र से वैदिकी प्रक्रिया में व्याकरण विषयक बहुलता का निर्देश किया हे ! वोपदेव पूर्ववर्ती पाणिनीय व्याकरण के अतिरिक्त केवल सरस्वतीकण्ठाभरणं में ही वैदिकी प्रक्रिया है ! कालक्रम से पाणिनीय वैदिक प्रयोगों का लौकिक भाषा में प्रयोग होने लगा ! जिनका प्रयोग वोपदेव ने मुग्धबोध में किया है - यथा

तुराषाट्, कारयिष्णुः, भ्राजिष्णुः, भविष्णुः, सुदर्शः, दुःशासः, दुर्योधः इत्यादि !

पाणिनि ने स्वर की दृष्टि से जिन अनुबंधों का प्रयोग किया था वोपदेव ने केवल लौकिक परक व्याकरण रचना होने के कारण अपनी शैली में उनका भी पूर्णतया परिहार किया है यथा पाणिनीय तव्यत् प्रत्यय में त् अनुबंध 'तित्स्वरितं' सूत्र से स्वरित प्रयोजनार्थ है अतः वोपदेव ने इस अनुबंध का प्रतिहार करते हुए तव्यत् के स्थान पर तव्य प्रत्यय ही रखा है !

वर्णोपदेश योजना में वोपदेव पाणिनि से पूर्णतया प्रभावित थे उन्होंने पाणिनीय व्याकरण की सूत्रात्मक वर्णोपदेश शैली को अपनाया है ! पाणिनि के वर्णोपदेश में १४ माहेश्वर सूत्र है किन्तु वोपदेव ने १० सूत्रों में ही उनका अंतर्भाव किया है!

पाणिनीय-अइउण्, ऋलृक् के स्थान पर वोपदेव ने अइउऋलृक्, हयवरट् लण् के स्थान पर हयवरल्, झभञ घढधष के स्थान पर झभघढधष् लिया है !अन्य सूत्रों में साम्य है किन्तु वोपदेवीय वर्णोपदेश में अंतिम हल् सूत्र का सर्वथा अभाव है!

संज्ञाओं के विषय में [6] भी वोपदेव ने यत्र तत्र पाणिनि की संज्ञाओं का अनुकरण किया है किन्तु फिर भी उन्होंने आंशिक संज्ञा व एकाक्षरी संज्ञाओं का प्रयोग अधिक किया है ! कई स्थानों पर वोपदेव ने पाणिनीय संज्ञाओं का परिहार ही किया है !यथा क्तक्तवतू की निष्ठा संज्ञा का वोपदेव ने आवश्यकता न समझकर परिहार किया है ! पाणिनि और वोपदेव की कृत्प्रत्यय सम्बन्धी संज्ञाओं में निम्न समानता और भिन्नता है -

संज्ञागत समानता

वोपदेव	पाणिनि
• कृत्	• कृत्
• भाव	• भाव

संज्ञागत भिन्नता

वोपदेव	पाणिनि	वोपदेव	पाणिनि
• ल्य	• कृत्य	• ज	• अपादान
• क	• कारक	• ड	• अधिकरण
• घ	• कर्ता	• जि	• संप्रसारण
• ढ	• कर्म	• रु	• गुरु
• ध	• करण	• ऊङ्	• उपधा
• भ	• सम्प्रदान	• त्य	• प्रत्यय
• गि	• उपसर्ग	• धु	• धातु

वोपदेव ने अधिकांशतःएकाक्षरी संज्ञाओं का प्रयोग करके अपने व्याकरण को सरलतम तथा संक्षिप्ततम बनाने का प्रयास किया है ! तथा प्रक्रिया की सरलता के लिए निष्ठा, सत् इत्यादि संज्ञाओं प्रयोग नहीं किया है!

वोपदेव ने स्वतन्त्र व्याकरण संप्रदाय की रचना की है किन्तु सूत्र रचना शैली पर पाणिनि का पूर्णतया प्रभाव है ! कुछ स्थानों पर वोपदेव ने पूर्णतया पाणिनि के सूत्रों का ही ग्रहण किया है तथा कुछ स्थानों पर शब्दों का क्रम बदल कर सूत्रों का ग्रहण किया है यथा-

वोपदेव	पाणिनि
1. गत्यर्थादशीस्थासवसजनजृक्ष्लिषरुहः!(१०९३)	1. गत्यर्थादकर्मकश्लिषशीङ् स्थासवसजनरुहजीर्यतिभयश्च! (३/४/७२)
2. ग्रहनन्दि-पचादेर्णिननान् घे! (९९३)	2. नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः!(३/१/१३४)
3. धेट्दृशपाप्प्राध्मःशः(९९८)	3. पाघ्राध्माधेट्दृशः शः!(३/१/१३७)

कुछ स्थानों पर वोपदेव ने पाणिनि के दो या दो से अधिक सूत्रों का एक ही सूत्र में अन्तर्भाव किया है यथा-

वोपदेव	पाणिनि
1. चजोःकगौ धित्यसेम्क्तयज्ञाङ्गयज मत्यर्थ वन्चाम्! (९७२)	1. चजोः कुः घिण्ण्यतोः!(७/३/५२) 2. प्रयाजानुयाजौयज्ञाङ्गे!(७/३/६२) 3. वन्चेर्गतौ!(७/३/६३)
2. ते ल्याः शक्यार्ह्यप्रेष्यानुज्ञाप्राप्त काले वा!(९८९)	1. प्रैषातिसर्गप्राप्त कालेषु कृत्याश्च!(३/३/१६३) 2. अर्हे कृत्यतृचश्च!(३/३/१६९) 3. शकि लिङ् च!(३/३/१७२) 4. कृत्याश्च!(३/३/१७१)
3. स्रिवावमव ज्वरत्वरोवूड्ङं ञमे च!(१०३९)	1. च्छवोः शूडननुनासिके !(६/४/१९) 2. ज्वरत्वरश्रिव्यविमवामुपधायाश्च! (६/४/१९)

कुछ प्रयोगों की सिद्धि अष्टाध्यायी के सूत्रों से न होकर वार्तिकों से होती है! उन वार्तिकों का भी मुग्धबोध में अंतर्भाव करके संक्षेपीकरण व सरलता के साथ साथ भाषा में आए सभी शब्दों की सिद्धि केवल अपने सूत्रों के माध्यम से ही किया है और उसके लिए वार्तिकों का अंतर्भाव भी अपने सूत्रों में किया है यथा -

वोपदेव	पाणिनि
1. धो केलिमो ढघे! (९८८)	1. केलिमर् उपसंख्यानम्! (वा.)
2. खनो डडरे केकवकाः!(११३९)	2. डो वक्तव्यः, डरो वक्तव्यः, इको वक्तव्यः,इकावको वक्तव्यः!(वा.)

कुछ स्थानों पर जहाँ पाणिनीय सूत्र और वार्तिक दोनों की सहायता से कार्य होता है वहां पर भीवोपदेव ने एक सूत्र के माध्यम से सिद्धि करके संक्षेपीकरण की शैली का अनुसरण किया है यथा-

वोपदेव	पाणिनि सूत्र +वार्तिक
1. गदमदयमचराचरोगेर्यः!(९७९)	1. गदमदचरयमश्चानुपसर्गे (३/१/१००)+ चरेराङ चागुरौ (वा.)
2. नृत्खनरन्जःषकः!(१००२)	2. शिल्पिनिष्वुन्(३/२/१०६) + नृतिखानिरन्जिभ्यः परिगणनम् कर्तव्यम्(वा.)
3. आतो अन्तः श्रद्वेः!(११५७)	3. आतश्चोपसर्गे (३/२/१०६)+ श्रदन्तरोरुपसर्गवद्वृतिः! (वा.)

इस प्रकार पाणिनि और वोपदेव की शैली में अनेक स्थानों पर साम्य है! अपने व्याकरण की पूर्णता के लिए वोपदेव ने पाणिनि तथा वार्तिककार के मतों को अपने व्याकरण में मान्यता दी है तथा अपने व्याकरण शैली को सरल बनाने का प्रयास भी किया है! [7]

संधर्व सूची

1. वा.प. -१/१३
2. व्या. महा. - पृ. ५३
3. अग्रवाल वा.दे.- पा. का. भा., पृ.४७७
4. बेल्वेकर एस.के.- एस.एस.जि,पृ.८७
5. मुग्धबोध-११८४
6. केवल कृत् प्रत्यय संबन्धी संज्ञा